Research Chronicler: International Multidisciplinary Refereed Peer Reviewed Indexed Research Journal
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

बाल गंगाधर तिलक का अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics)

डॉ0 अर्चना कुमारी
बी0 आर0 ए0 बी0 यू0, मुजफ्फरपुर, (बिहार) भारत

सार संक्षेप

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जीवन दर्शन भी आज के वैश्विक नीतिशास्त्र का अच्छा उदाहरण है। उनके अनुसार ष्शरीर और मन का अच्छा स्वास्थ्य उपलब्ध कराना ही सांसारिक जीवन को आदर्शपूर्ण एवं निरोग बनना है । व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को आदर्शपूर्ण एवं निरोग बनाकर हम आगे निकल सकते है । व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में नैतिकता के पालन के लिए तथा सम्पूर्ण नैतिक या सामाजिक समस्याओं कें अंतरिम समाधान के लिए खास नैतिक चरित्र के निर्माण की आवश्यकता है ताकि व्यक्ति ष्शारीरिक एवं मानसिक, दोनों स्तरो पर संतुलित एवं निर्द्वन्द्व हो सकें । ऐसा कर्म हमारे वर्तमान तनावपूर्ण प्रतिस्पर्धो परिवेश में केवल मनोकायिक संतुलन द्वारा हो धटित हो सकता है । यहाँ तिलक नीतिशास्त्र पर चर्चा करने से पूर्व सर्वप्रथम हम उनकें जीवन –वृतांत की चर्चा संक्षेप में करना चाहेगें क्योकि यह पूरी तरह अनुप्रयुक्त है ।

मुख्य शब्दः बाल गंगाधर तिलक, नीतिशास्त्र, दर्शन

इस संबंध में सर्वप्रथम यह उल्लेख किया जा सकता है कि बाल गंगाधर तिलक जन्म महाराश्ट्र के चितपावन ब्राहमण कुल में कोकन जिले के रत्नागिरी नामक स्थान में 23 जुलाई 1856 ई0 को हुआ । इनके पिता श्री गंगाधर पन्त शिक्षा विभाग में कार्य करते थे । गणित और संस्कृत में उनकी विशेष अभिरूचि थी जिनका पूरा प्रभाव उनका पुत्र तिलक पर पडा । वे प्रारंभ से ही कुषाग्र बुद्धि के थे । 15 (पन्द्रह) वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हुआ, जब वे दस वर्ष के थें तब उनकी माता का निधन हो गया । बाबजूद इनके उन्होने असीम धैर्य, अनवरत अध्यवसाय का परिचय देते हुए अपने चरित्र के विकास की अनवरत साधना की और 20 (बीस) वर्ष की अवस्था में बी0 ए0 की शिक्षा प्राप्त कर ली । 23 वर्ष में कानून की परीक्षा पास कर गये ।

उनके अन्दर देशभक्ति का जज्बा भरा पड़ा था, और यह देशभक्ति, स्वतंत्रता, समानता, मानवाधिकार तथा समाज सुधार से ओत–प्रोत थी। वे जनता के सच्चे सेवक थें । तभी तो जब 1894 में सरकार नें बी0 एस0 वापट पर मुकदमा चलाने की बात की तो तिलक सरकार के विरूद्ध होकर उनकी मदद को तत्पर हो गये । इसी तरह 1889 में उन्होने आर्थर क्रॉफड की मदद की । वें सदैव अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाते रहें और आजन्म को उनके अधिकारों के बारे में जाग्रत करने का काम किया । उन्होने हीनताग्रस्त आम लोग मे स्वदेशी और

देशभक्ति की भावना को जागृत किया । 1916 में उन्होने होम रूल लीग की स्थापना की जिसके कार्यो के कारण पूरे देश में उनकी ख्याति फैल गई । वें अपने पिता की तरह कभी भी आत्मसम्मान से समझौता नहीं करने वालें थें ।

अपने 64 वर्ष की आयु तक लगातार एक दार्शनिक, राजनीतिक और सुधारक के रूप में उन्होनें अपने जीवन के विभिन्न संधर्षो का डटकर मुकाबला किया । उन्हे अनेक ब्यक्तिगत दुःख भोगने पड़े और स्वजनों का वियोग सहना पड़ा किन्तु इन सबके बाबजूद उन्हे कभी सार्वजनिक जीवन से ंविराम नही मिला और न वें कभी निराशावाद सें अभीभूत होकार बौद्धिक अन्तरर्मुखी ही बने । उनके अन्दर दृढता, आत्मत्याग की उच्च भावना भरी पड़ी थी जिसकें बल पर वे विपरीत परिस्थितियां में भी अकेले ही आगें बढतें रहें । अन्दर से कोमल और बाहर से इतने कठोर थें ।

की अपने सिद्धांतों के संबंध में किसी से समझौता के लिए तैयारी नही हुए । 1880 में चिपलूणकर और तिलक ने मिलकर पूना न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की और पूरे एक वर्ष तक बिना एक पैसा लिए तिलक ने इस शिक्षणशाला में अध्यापन किया । 1884 में डेक्कन एजुकेशन सोसायटी की स्थापना हुई और 1885 में फर्ग्युसन कॉलेज खोला गया । पाँच वर्ष तक इस कॉलेज में तिलक संस्कृत और गणित में अध्यापन किया । अपना पवित्र चरित्र, गंभीर पांडित्य और सरलता के कारण आर्चाय के रूप में तिलक की लोकप्रियता काफी बढी । 1890 में डेककन एजुकेशन सोसायटी से अलग होकर स्वतंत्र रूप से केसरी और मराठा नामक पत्रिका का संपादक करने लगें । इसके माध्यम से उन्होने महाराष्ट्र की जनता में देशभक्ति की भावना को जागृत करने का काम किया। और इसमें वे बहुत हद तक सफल हुए ।

पुनः 1893 ई0 में उन्होनें गणपति उत्सव को आरंभ किया और इसके माध्यम से हिन्दुओं में र्मियता और संधर्ष ष्शक्ति की भावनाओं को जागृत किया। फिर 1895 में उन्होने शिवाजी उत्सव को आरंभ किया । तिलक का मुख्य कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र था । प्रसिद्ध पत्रिका केशरी के माध्यम से उन्होने तकरीबन चालीस साल तक प्राकृतिक अधिकारों, राजनिति स्वतंत्रता और न्ययन के संदेष को जान–जन तक पहुचाने का काम किया । 1897 में महाराष्ट्र के अन्दर एक भयंकर महामारी फैली जिसमें तिलक ने अपनी जान की परवाह किये बिना लोगों की सेवा की । उनमें प्रचण्ड ष्शक्ति थी जिसके बल पर स्वराज्य के संग्राम में वें अभदेय चटट्ान की तरह खड़े पड़ते थें । लोग उन्हें एक अजय योद्धा और उपनिवशवादी अंग्रेजी ष्शासन के प्रबल ष्शत्रु के रूप में देखते थें । मुजफ्फरपुर में खुदीराम बोस नें अंगज अधिकारों पर बम फेका था इस बम–काण्ड कें संबंध में केशरी में तिलक ने कई लेख छापे जिसकें कारण उन्हें 1908 से 1914 तक मांडले की जेल में रखा गया । इसी कारावास के दौरान तिलक ने अपनी प्रसिद्ध रचना

गीता–रहस्य लिखी जो उनके जेल से बाहर आने के बाद 1915 में प्रकाशित हुई । 1916 में होमरूल–लीग की स्थापना हुई । तिलक का संदेश था – स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । 31 जुलाई 1920 में तिलक की मृत्यु हो गयी ।

समकालीन दर्शन में 1880 से 1920 का काल अनुप्रयुक्त नैतिक आंदोलन के लिए महत्वपुर्ण काल रहा । इस अवधि में तिलक ने कई तरह के सराहनीय व्यावहारिक कार्य संपन्न किया । उनका जीवन विभिन्न प्रकार के प्रगतिशील कार्यो की कहानी है । वे 'शक्तिशाली व्यक्ति तथा नेता थें और जिस किसी कार्य में लगें उसे पूरी तमन्ना और गतिशीलता से उसे सम्पन्न किया । अपने प्रारंभिक काल से वें अध्ययन–अध्यापन में गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है । वे अध्यापन गहरी रूची रखते थें । उन्होने, ऋग्वेद, वेदान्त, महाभारत, गीता, कांट, ग्रीन आदि के दर्षनों का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है । उनके अध्यापन 'शैली का परीणाम था कि आधुनीक भारत ने ऐतिहासिक करवट ली जिसमें नैतिकता, लोकतंत्र, विज्ञान और अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्र में कई उपलब्धियों प्राप्त हुई । उन्होनें पूरे जीवन काल में नैतिक चरित्र पर विशेष बल दिया और इसी के अनुरूप अपने जीवन को जीया जो उनका अनुप्रयुक्त नैतिक आदर्श कहाँ जा सकता है ।

गीता–रहस्य तिलक की एक प्रसिद्ध रचना मानी जाती है यद्यपि भगवदगीता भारतीय वाडमय की एक अद्भूत रचना है जिसका विश्व साहित्य पर जाने–अनजाने विभीन्न रूपों में प्रभाव खोजा जा सकता है। तभी तो विश्व के अधिकांश चिंतकों और व्यक्तित्वो नें मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा की है । आधुनीक भारत के लगभग सभी मनीशियों नें किसी न किसी रूप में इसें प्रेरणस्त्रोत माना है । तिलक ने तो भगवतगीता को पूरी तरह जिया है और यह उनका नैतिक–दार्शनिक प्रयोग है । इसी से इन्होनें निर्भय होकर स्वधर्म का पालन का पाठ सिखा था । जीवन–प्रयन्त इन्होनें परम भक्ति और निश्चल अध्यवसाय के साथ–साथ इस दर्षन का अनुकरण किया । इसलिए तिलक को आधुनीक भारत में गीता के कर्म–दर्षन का प्रचण्ड उन्नयनकर्त्ता कहाँ जा सकता है ।

'गीता रहस्य' लिखने में तिलक नें जिन अंग्रेजी ग्रथों का सहारा लिया है उनमें कांटा का 'क्रिटिक ऑफ प्यूर रीजन' और ग्रीन का पोलीगोमेना टू इथिक्स मुख्य है ।

वैसे तिलक के ग्रथ का आधार बहतसुत्र (शंकर–भाष्य) महाभारत और गीता है और इनमें हिन्दुओं के कर्मयोग दर्शन विवेचन किया गया है । Kant, Green, और कर्मयोग दर्शन आदि उन्कें अनुप्रयुक्त नैतिक चिंतन के आधार स्तम्भ है ।

'गीता रहस्य की प्रशंसा करतें हुए पुनः ढण्च वर्मा लिखतें है । '' गीता रहस्य एक चिरस्थायी ग्रंथ है । यह मराठी भाषा में एक युगान्तरकारी कृति है ।''2 '' जिस प्रकार वायु न केवल ऑक्सीजन है, न हाईड्रोजन और न कोई अन्य गौस बल्कि

किसी विषिष्ट अनुपात में इन तीनों का मिश्रण है । उसी प्रकार गीता सब योगो का मिश्रण है ।''3

गीता–रहस्य में तिलक ने स्पष्टतया बतलाया है कि आध्यात्मिक स्वतंत्रता का सार इसमे नहीं है कि मनुश्य एकान्तवास कर, अपने व्यक्तित्वो का नाश करें और समाज के प्रति कर्त्तव्यों का पालन भूल जायें । इनका निहितार्थ है, कि व्यक्ति को स्वेच्छापूर्वक और निः स्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए । अपने कर्मयोग के संदेश में उन्होने यजुर्वेद तथा गद्वय उपनिसदों में प्रतिपादित कर्म के सिद्धांत का सामाजिक आदर्शवाद, लोकतांत्रिक नैतिकता तथा गतिशील मानवातावाद की आधुनीक भावना के साथ समन्वय करने का प्रयत्न किया है । तिलक की दृष्टि में कर्मयोग जीवन नैतिकता तथा धर्म का सांगोपांग समुचित दर्शन है । यह सुखवाद तथा इन्द्रियानुभववाद के सिद्वांतों का भी स्वीकार नही करता है । यह अन्तः प्रज्ञयावाद के भी पार है और झंदजष और ग्रीन द्वारा प्रतिपादित नैतिकता के सिद्धांतों को भी पीछे छोड़ देता है । तिलक गीता के निश्काम धर्म से काफी प्रभावित थे तभी तो उन्होनें विवेकानन्द के साथ बातचीत करते हुए कहाँ था ''गीता निष्कर्ष कर्म का उपदेश देती है ।''4

पुनः गीता के संबंध में उनका मानना है कि गीता में अद्वैतवादी तत्वशास्त्र का प्रतिपादन किया गया है । यह उदात्त तथा अनुप्रेरित 'शैली में वैदिक धर्म का सार प्रस्तुत करती है । वे बतलाते है – गीता एक महान और गंभीर ग्रंथ है ।''5 इस तरह वे गीता के अंदर कर्म की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहते है कि कर्म सवो के लिए आवश्यक है । उनके अनुसार ''गीता का मुख्य उदेश्य जनता की व्यवहारिक सत्ता का उपदेश देना था तथा उनके आधार पर कर्म की आधारभूत समस्याओं का निणर्य करना है ।''6 अतः वे इस बात पर विशेष बल देते हुए दीख परते है कि कर्म योग में नैतिकता पर विशेष बल दिया जाना चाहिए । कर्म कम व्याख्या करतें हुए वे बतलाते है ''अकर्म का अर्थ सात्विक कर्म और कम का अर्थ राजस कर्म है, विकर्म में वे कर्म सम्मिलित होते है जिन्हे मनुष्य भ्रंतिवष करके छोड़ देता है ।''7

तिलक सूक्ष्मदर्शी और प्रतिभा–समपन्न व्यक्तित्व के धनी थें । वे गणितज्ञ भी थें और एक गंभीर नीतिशास्त्रीय चिंतक भी आचारनीती की जटिल समस्याओं के अदुभुत । विश्लेषण एवं समन्वय की क्षमता उनमें थी तभी तो उन्होने भगवदगीता, कांट तथा ग्रीन की आचारनीति का प्रभावकारी तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया । इस बहुमुखी बौद्धिक प्रतिभा के साथ–साथ उनका चरित्र दृढ़ तथा उदार था । उनका निजी जीवन निश्कलंक था । तभी तों उन्होनें गीता को केवल बौद्धिक रूप नहीं स्वीकार किया बल्कि उसे जीया । यही कारण है कि संपूर्ण जीवन गीता की शिक्षाओं से ओत–प्रोत था । इनका दृष्टिकोण काफी व्यापक था । उन्होनें पूर्व और पश्चिम दोनों चिन्तन धाराओं के

आधार पर सामान्य निश्कर्श निकालने की चेष्टा की । उन्होनें भगवद गीता से निर्भय होकर स्वधर्म का पालन करने का पाठ सीखा था । इसिलिए वें परम भक्ति और निश्चल अध्यवसाय के साथ इस दर्शन का अनुकरण करते रहे । वस्तुतः गीता के सिद्धांतों को अंगीकार करने के कारण उनका व्यक्तित्व एवं विशेष ढाँचे में ढल गया था और परिर्वतित हो गया था । गीता रहस्य का भारतीय जीवन पर इतना स्थायी प्रभाव इसलिए पड़ा कि वह एक उच्चतम प्रकार के बौधिक और नैतिक व्यक्तित्व से उदभूत हुआ था । यह ठीक है कि गीता पर कई पर कई भाष्य और टीकाएँ लिखी गयी है किन्तु सबसे अधिक ख्याति और लोकप्रियता तिलक के गीता–रहस्य को मिलि ।

इस प्रकार यह बतलाया जा सकता है कि तिलक का गीता–रहस्य उनकी सबसे बड़ी कृति है । तत्व ज्ञान की दृष्टिकोण से गीता को वे प्रवृतिपरक (अनुप्रयुक्त) मानते थें ''1 तथोस्तु कर्मसन्यासात् कर्मयोगों विशिब्यते'' इस ष्लोक पर बल देते हुए उन्होने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के नियम और ज्ञानोत्तर व्यवसायात्मिका बुद्धि की प्राप्ति के बाद लोग संग्रहार्थ निब्पन्न अनासक्तिपूर्वक विहित ज्ञानाधारित भक्तिमय कर्मयोग ही गीता का चरम प्रतिपाध है ।

इस ग्रथ से तिलक के अलौकिक 'शास्त्रज्ञान का पता चलता है । तिलक सचमुच में महान थें । इधर एक हजार वर्षो में गीता का इतना बड़ा मर्मज्ञ 'शायद ही कोई हुआ तिलक का राष्ट्रवाद समानता–स्वतंत्रताके वेदांती आदर्श का प्रयोगत्मक दर्शन ;।चचसपमक चैपसवेवचीलद्ध था जिसमें मत्सीनी, वर्क मिल और बिल्सन आदि की पाश्चात्य धारणा का समन्वय था और इसी व्यापक संदर्भ में उन्होनें स्वराज्य का नारा दिया । आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने के कारण स्वराज्य के संबंध में उन्होनें लिखा है '' स्वराज्य मनुष्य का अधिकार ही नही, बल्कि धर्म है । ''8 उन्होनें बतलाया कि राजनीतिक दृष्टिकोण से स्वराज्य का अर्थ राष्ट्रीय स्व–शासन है जबकि नैतिक दृष्टिकोण सें इसका अर्थ है कि आत्मनिग्रह की पूर्णता प्रपप्त करना जो स्वधर्म के बालन के लिए अति आवश्यक है । साथ ही वे इसके आध्यामिक पक्ष की चर्चा करते हुए कहते है कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण स्वराज का अर्थ आध्यात्मिक स्वतंत्रा और घ्यानंजय आन्नद की प्राप्ती लगाया जा सकता है। स्वराज का अघ्यात्मिक अर्थ स्पष्ट करते है। वे लिखते है– 'अपने में केन्द्रीत अपने पर निर्भर जीवन ही स्वराज है। स्वराज परलोक में है। और इस लोक में भी है। जिन ऋषियों ने स्वधर्म के नियम का प्रतिपादन किया उन्होनें अन्त में वन की राह पकड़ी क्योकि जनता स्वराज का उपभोग कर रही थी। उस स्वराज की रक्षा का भार क्षत्रिय राजाओ पर था। मेरा विश्वास है और मेरी प्रस्थापना है कि जिन लोगो ने इस संसार में स्वराज का उपभोग नही किया हैं वे परलोक में भी स्वराज का अधिकारी नहीं हो सकतें।''9

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि

तिलक नैतिक, राजनीतिक, अध्यात्मिक सभी प्रकार के स्वतंत्रा की रक्षा करते थे। निश्कर्शतः यह बतलाया जा सकता है कि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक समकालीन युग के नीतिशास्त्री एवं प्रयोगवादी एवं दार्शिनिक विभुति थे। वे महान राजनीतिज्ञ, गणितज्ञ, दार्शनिक, संस्कृत के विद्वान, ओजस्वी लेखक, मराठी गध (गद्य) के स्पष्ट और निर्भिक एवं साहसी नेता के रूप में आज भी स्मरणीय है।

तिलक के दर्शन को हम अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र कह सकते है क्योकि उन्होने नैतिकता को चरित्रार्थ करके दिखाया है। इस प्रकार विश्व के इतिहास में तिलक का विशिष्ट स्थान माना जा सकता है। उन्होने अपने नैतिक चरित्र के बल पर जीवन के विभिन्न सघर्षो का डटकर सामना किया जो अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का सर्वोत्तम उदाहरण माना जा सकता है। अतः उन्हें भारत के दार्शनिक आचारनीति सहित लोकतात्रिक राजनीति का पथान्वशक माना जा सकता है।

संदर्भ ग्रथ सूचीः

(1) वर्मा, डॉ0 वी0 पी0, आधुनिक भारतीय चिंतन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशक, प्रथम संस्करण –1971 पृ 555–56

(2) वर्मा विश्वनाथ प्रसाद, Philosophy of history in the bhagavadgita, the philosophical Quarterly, अमलनेर, जिल्द 30 संख्या –2 जूलाई 1957 पृ0 93–114

(3) वही पृश्ट 557

(4) वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद, दि रिलेशन्स ऑफ तिलक एण्ड विवेकानन्द, द वेदान्त केसरी, मद्रास, जिल्द–45 संख्या –7 नवम्बर 1958, पृ0 291–92

(5) तिलक, बाल गंगाधर, भगवद्गीता रहस्य पूना, 1950

(6) तिलक, बी0 जी0, गीता रहस्य (हिन्दी संस्करण) पृ0–506

(7) वही पृ0–675

(8) तिलक का 1916 की कांग्रेस के उपारान्त यवतमाल में दिया गया भाषण `चममबीमेए पृ0–256

(9) तिलक, बी0 जी0, कर्मयोग एण्ड स्वराज्य, स्पीचेज एण्ड राइटिंगस ऑफ तिलक पृ0 –276–80